RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY

January 2026

NEWSPAPER CLIPPINGS

हिन्दुस्तान

6th Jan 2026

डीयू में दो पुलिस बूथ का उद्घाटन

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस के सहयोग से सोमवार को दिल्ली विश्वविद्यालय में दो पुलिस बूथों का उद्घाटन हुआ। इस दौरान मिरांडा हाउस कॉलेज में पिंक बूथ और विश्वविद्यालय के गेट नंबर 4 पर इंटीग्रेटेड पुलिस बूथ का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली के पुलिस कमिश्नर सतीश गोलचा ने कहा कि जब भी किसी को कोई दिक्कत आती है तो प्रत्येक व्यक्ति सबसे पहले 100 नंबर या 102 पर कॉल करता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता डीयू कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने की।

अमर उजाला

6th Jan 2026

दिल्ली विश्वविद्यालय को मिला पहला पिंक बूथ, सुरक्षा होगी मजबूत

डीयू के मिरांडा हाउस कॉलेज में पिंक बूथ और इंटीग्रेटेड पुलिस बूथ का हुआ उद्घाटन

अमर उजाला ब्यूरो

दिल्ली विश्वविद्यालय में बूथों का उद्घाटन करते पुलिस कमिश्नर सतीश गोलचा व अन्य। स्रोत : विश्वविद्यालय

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय को छात्रों की सुरक्षा के मद्देनजर पहला पिंक बूथ मिला है। यह बूथ महिला पुलिस कर्मी चलाएंगी लेकिन सेवाएं सभी वर्गों को मिलेगी। दिल्ली पुलिस के सहयोग से सोमवार को डीयू में दो पुलिस बूथों का उद्घाटन हुआ। इसमें से पिंक बूथ मिरांडा हाउस कॉलेज में और दूसरा इंटीग्रेटेड पुलिस बूथ विश्वविद्यालय के गेट नंबर-4 पर शुरू किया गया है। उद्घाटन कार्यक्रम में दिल्ली के पुलिस कमिश्नर सतीश गोलचा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डीयू कुलपति प्रो योगेश सिंह ने की। औपचारिक कार्यक्रम डीयू वाइस रीगल लॉज स्थित कन्वेंशन हॉल में हुआ। मुख्य अतिथि दिल्ली पुलिस कमिशनर सतीश गोलचा ने कहा कि हम मुसीबत की घड़ी के साथी हैं।

उन्होंने कहा कि दिल्ली पुलिस का मौरिस नगर थाना डीयू को ही प्रायोजित है। ये दो नए बूथ भी उसी का विस्तार है। डीयू कुलपति प्रो योगेश सिंह ने कहा कि पिंक बूथ महिलाओं के लिए सुरक्षा, आत्मविश्वास, सशक्तिकरण, आत्मसम्मान और विश्वास का प्रतीक है।

उन्होंने बताया कि उत्तरी जिला दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर यह पिंक बूथ स्थापित किया है। पिंक बूथ का मकसद एक सुरक्षित, आसानी से पहुंच वाला और मददगार माहौल प्रदान करना है। मिरांडा हाउस कॉलेज की प्रिंसिपल प्रो डॉ बिजया लक्ष्मी नंदा ने कहा कि यह जगह काफी असुरक्षित और डार्क जोन थी लेकिंन इस बूथ के बनने से यह काफी सुरक्षित स्थान में परिवर्तित हो गई है। इससे छात्राओं को काफी सुरक्षित माहौल मिल सकेगा।

डीयू रजिस्ट्रार इस कार्यक्रम में उत्तरी जिला पुलिस परिक्षेत्र मधुर वर्मा, विशेष आयुक्त 'डॉ विकास गुप्ता, संयुक्त आयुक्त मध्य कानून एवं व्यवस्था रविंद्र यादव, डीयू दक्षिणी परिसर की निदेशक प्रो रजनी अब्बी, डीन ऑफ कॉलेजेज प्रो बलराम पाणी, एसओएल की निदेशक प्रो पायल मागो, समेत अन्य अधिकारी व छात्र उपस्थित रहे।'

बूथों पर महिला स्टाफ चौबीस घंटे मटीरियल आदि जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर से तैनात रहेंगी : दोनों पुलिस बूथों को कंप्यूटर, प्रिंटर, वाई-फाई, एजुकेशनल. देखने वाली स्क्रीन के साथ सीसीटीवी लैस किया गया है। दोनों बूथों पर कैमरे भी लगाए गए हैं। इन बूथों पर महिला स्टाफ चौबीस घंटे तैनात रहेंगी। इन बूथों पर शिकायत दर्ज, साइबर शिकायतें, गुमशुदगी की रिपोर्ट, किराएदार और नौकरों का वेरिफिकेशन कराया जा सकेगा।

राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
15th Jan 2026

डीयू में दयाल सिंह ईवनिंग कालेज के नामकरण को लेकर विवाद

2017 में कालेज का नाम 'वंदे मातरम् महाविद्यालय' रखने का प्रस्ताव तीव्र विरोध के बाद लेना पड़ा था वापस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) में कालेज के नाम परिवर्तन को लेकर विवाद गहराता दिख रहा है। डीयू प्रशासन द्वारा दयाल सिंह (ईवनिंग) कालेज का नाम सिख योद्धा बंदा सिंह बहादुर के नाम पर करने की संभावित पहल ने शिक्षकों और कर्मचारियों के बीच असहमति को जन्म दे दिया है। कालेज की स्टाफ एसोसिएशन ने इस प्रस्ताव का कड़ा विरोध जताया है।

शिक्षकों के अनुसार, उन्हें इस प्रस्ताव की जानकारी तब मिली जब पिछले महीने 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस के अवसर पर कुलगुरु प्रो. योगेश सिंह ने सार्वजनिक मंच से इसको बताया। कुलगुरु ने कहा था कि निर्णय अंतिम चरण में है और दयाल सिंह ईवनिंग कालेज का नाम बंदा सिंह बहादुर के नाम पर रखने की इच्छा है। हालांकि, स्टाफ का कहना है कि इस तरह का कोई भी निर्णय लेने से पहले न तो स्टाफ काउंसिल से चर्चा की गई और न ही छात्रों या गैर-शिक्षण कर्मचारियों से राय ली गई।

गौरतलब है कि दयाल सिंह (मार्निंग) और दयाल सिंह (ईवनिंग) कालेज एक ही परिसर से संचालित होते हैं। वर्ष 2017 में ईवनिंग कालेज के डे कालेज बनने के बाद भी दोनों संस्थान एक ही भवन में चल रहे हैं। स्टाफ एसोसिएशन ने गत आठ जनवरी को बुलाई गई आपात बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर प्रशासन की प्रक्रिया पर आपत्ति जताई थी। एसोसिएशन ने अपने प्रस्ताव में 22 जून 1978 की ट्रांसफर डीड का हवाला दिया है, जिसमें दयाल सिंह कालेज को दिल्ली विश्वविद्यालय ने अधिग्रहित किया था। 2017 में कालेज का नाम 'वंदे मातरम् महाविद्यालय' रखने का प्रस्ताव विरोध के बाद वापस लेना पड़ा था। स्टाफ एसोसिएशन ने प्रस्ताव को वापस लेने, स्टाफ काउंसिल की बैठक बुलाने व कानूनी दस्तावेज सार्वजनिक करने की मांग की है।